International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत में सामाजिक परिवर्तन की नवीन अवधारणा

डॉ.हरिचरण मीना, सह आचार्य
समाज"ाास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर

शोध सारां"ाः–

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक तथ्य है और कोई भी समाज इससे अछूता नहीं रह सकता, चाहे वह आदिम हो या आधुनिक परिवर्तन की अवधारणा सर्वव्यापक है. इसके रूप और घटक समय और स्थान के अनुसार भिन्न हो सकते हैं

एक निश्चित समाज या सामाजिक अवधारणा के संबंध में परिवर्तन को समय और इतिहास के तत्वों के संदर्भ में देखा जाता है। मैकाइवर और पेज ने कहा है "समाज का अस्तित्व समय की एक श्रृंखला मात्र के रूप में हैं। यह परिणत हो रहा है, अस्तित्वपूर्ण वस्तु नहीं है. वर्तमान संबंधसूत्रता की प्रक्रिया और परिवर्तित संतुलन है ''अधिकतर लोग परिवर्तन का स्वागत करते हैं क्योंकि परिवर्तन वर्तमान पद्धतियों में विविधता लाता है और विविधता को जीवन का आनन्द माना जाता है. किन्तु आकस्मिक और तीव्र परिवर्तन के क्षणों में यथास्थिति में लौटने की इच्छा या गृहातुरता दिखाई देती है। भारत में सामाजिक परिवर्तन के दो पहलू हैं। इनमें प्रथम है, देश के बाहर से पढ़ने वाले प्रमुख प्रभाव और दूसरा है, भीतरी विकास, बाहर से जितने भी हमलावर यहाँ आये उन सभी ने देश के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पहलुओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। विश्व के अधिकतर अन्य क्षेत्रों में उभरती सभ्यताओं ने अपनी पूर्ववर्ती सभ्यताओं का स्थान ले लिया, किन्तु भारत में पुरानी और नई सभ्यताएं साथ–साथ चलती रही हैं। यहां तक कि आज भी एक तरह की विषमता विद्यमान है। इसका कारण यह है कि विविध सांस्कृतिक रूपों को स्वीकार करना भारत की मूल प्रवृत्ति रही है। सभ्यताओं का स्वांगीकरण या एकीकरण भारत में महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया।

मुख्य शब्दः– सामाजिक परिवर्तन, सर्वव्यापक, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, छोटी और बड़ी परम्पराए, बहुदेववादी, जादुई और गैर दा"ानिक, प्रभुत्व सम्पन्न,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रस्तावनाः–

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक तथ्य है और कोई भी समाज इससे अछूता नहीं रह सकता, चाहे वह आदिम हो या आधुनिक परिवर्तन की अवधारणा सर्वव्यापक है. इसके रूप और घटक समय और स्थान के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। भारत में सामाजिक परिवर्तन के दो पहलू हैं। इनमें प्रथम है, देश के बाहर से पढने वाले प्रमुख प्रभाव और दूसरा है, भीतरी विकास, बाहर से जितने भी हमलावर यहाँ आये उन सभी ने देश के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पहलुओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। विश्व के अधिकतर अन्य क्षेत्रों में उभरती सभ्यताओं ने अपनी पूर्ववर्ती सभ्यताओं का स्थान ले लिया, किन्तु भारत में पुरानी और नई सभ्यताएं साथ–साथ चलती रही हैं। यहां तक कि आज भी एक तरह की विषमता विद्यमान है। इसका कारण यह है कि विविध सांस्कृतिक रूपों को स्वीकार करना भारत की मूल प्रवृत्ति रही है। सभ्यताओं का स्वांगीकरण या एकीकरण भारत में महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया।

एक निश्चित समाज या सामाजिक अवधारणा के संबंध में परिवर्तन को समय और इतिहास के तत्वों के संदर्भ में देखा जाता है।

विभिन्न समाज"ाास्त्रियों ने भारत में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए प्रमुख रूप से निम्नांकित अवधारणाएं और दृष्टिकोण बताए हैंः

1. संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण
2. छोटी और बड़ी परम्पराएं
3. विविध परम्पराएं
4. ढाँचागत दृष्टिकोण
5. द्वन्द्वात्मक ऐतिहासिक दृष्टिकोण
6. संज्ञानात्मक ऐतिहासिक दृष्टिकोण
7. संस्थागत दृष्टिकोण
8. समन्वित दृष्टिकोण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण की अवधारणा :– भारत मे सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिए संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण अवधारणा को पहली बार प्रोफेसर एम. एन. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक 'कूर्ग इन मैसूर' मे प्रस्तुत किया। संस्कृतिकरण की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा कि ''यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से निम्न जातियां या जनजातियां अथवा अन्य समूह उच्च कही जाने वाली जातियों, विशेषकर द्विज जातियों के रीति– रिवाजों कर्मकांडों, विश्वासों, विचारधारा और जीवन पद्धति को अपना लेते हैं'' निचली जातियों के लोग उच्च जातियों के लोगों की जीवन शैली की नकल करते हैं और जाति–तंत्र में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनी कुछ ऐसी परम्पराओं का त्याग कर देते हैं, जिन्हें उच्च जातियों द्वारा अपवित्र समझा जाता है। सांस्कृतिक एकजुटता की इस प्रक्रिया को दर्शाने के लिए श्रीनिवास पहले ब्राह्मणीकरण शब्द का प्रयोग किया और फिर इसे बदलकर संस्कृतिकरण का नाम दिया। कई अध्ययनों से पता चला है कि निचली जातियों ने कई ऐसे समूहों की भी जीवन पद्धतियों का अनुकरण किया, जो अनिवार्यतः ब्राहमण नहीं थी. योगेन्द्र सिंह के अनुसार, संस्कृतिकरण के दो पहलू हैं : (क) ऐतिहासिक और (ख) संदर्भागत। ऐतिहासिक अर्थ में संस्कृतिकरण भारतीय समाज के समूचे इतिहास में सामाजिक एकजुटता की प्रक्रिया रहा है। जबकि संदर्भागत अर्थ में संस्कृतिकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया का प्रभाव अलग–अलग क्षेत्र में भिन्न–भिन्न होता है। यहां तक एक गांव से दूसरे गांव में भो इसमें अन्तर हो सकता ह। यह अन्तर निर्भर करता है संदर्भ के आन्तरिक घटकों और बाहरी घटकों पर संस्कृतिकरण की प्रकिया दो बातों की सूचक है पहली यह कि भारतीय समाज के कुछ वर्ग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से उपेक्षित रहे हैं, दूसरी यह कि संस्कृतिकरण के लिए आदर्श बनने वाले कुछ जाति समूहों की स्थिति विशेषाधिकार पूर्ण रही है। एक हद तक इसे ''प्रभुत्व सम्पन्न जातियों'' के वर्चस्व पर हमला कहा जा सकता है। श्रीनिवास ने ''प्रभुत्व सम्पन्न जातियों'' को गांव के स्तर पर आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक स्तर के अनुरूप परिभाषित किया है। किन्तु आजकल किसी जाति– समूह की संख्या और उसके राजनीतिक अधिकारों को भी जाति प्रभुत्व में जोड़ा जा सकता है। कुछ भागों में कुछ जातियों के अपसंस्कृ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तिकरण और जनजातीयकरण की प्रक्रियाएं भी दिखाई देने लगी हैं।

श्रीनिवास के अनुसार पश्चिमीकरण से अभिप्राय उन परिवर्तनों के साथ है, जो पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क, विशेषकर 150 वर्ष से अधिक से ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप आये। इस दौरान विभिन्न जाति समूहों विशेषकर उच्च वर्गों ने ब्रिटिश सांस्कृतिक शैली को अपना लिया. सांस्कृतिक अनुकरण के अलावा पश्चिमी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शैक्षिक विचारधारा और मूल्यों के क्षेत्र में भी पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। इससे देश में वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी संबंधी और शैक्षिक संस्थानों को स्थापना हुई और राष्टवाद तथा नए नेतृत्व का उदय हुआ। मानवतावाद और तर्कवाद के मूल्य पश्चिमीकरण की अवधारणा का आधार हैं। पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की तुलना करते हुए श्रीनिवास उपरोक्त मूल्यों की वजह से पश्चिमीकरण को प्राथमिकता देते हैं। उनका तर्क है कि आधुनिकीकरण में लक्ष्यों की युक्तिसंगतता पूर्वानुमानित होती है, जिसे अंतिम विश्लेषण में आवश्यकता नहीं कहा जा सकता। चूंकि मानवीय लक्ष्य मूल्य प्राथमिकताओं पर आधारित होते हैं और केवल साधनों की ही युक्तिसंगतता पूर्व निर्धारित की जा सकती है, सामाजिक कार्रवाई की छोटी और बड़ी परम्पराएं परिणति की नहीं। श्रीनिवास के अनसार पश्चिमीकरण के तीन स्तर हैं : प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक प्राथमिक स्तर का पश्चिमीकरण उन लोगों में हुआ, जो अंग्रेजों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आये माध्यमिक स्तर का पश्चिमीकरण उन लोगों में हुआ, जो प्रत्यक्ष लाभ उठाने वाले लोगों के सम्पर्क में आये और तृतीयक स्तर का पश्चिमीकरण इस प्रक्रिया का दूर से लाभ उठाने वाले लोगों का हुआ। श्रीनिवास का मानना है कि कुछ हद तक पश्चिमीकरण से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में तेजी आती है। उदाहरण के लिए भारत में पश्चिमीकरण की देन कही जाने वाली डाक, रेल और बस सुविधाओं तथा समाचार पत्रों के माध्यम से अब पहले के मुकाबले अधिक संगठित धार्मिक तीर्थयात्राएं बैठकें आदि आयोजित की जा सकती हैं तथा जातीय प्रतिबद्धताओ का निर्वाह किया जा सकता है। संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण अवधारणा की सीमाएं इस प्रकार हैं :

1. संस्कृतिकरण से केवल सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता स्पष्ट होती है और वह भी बड़े सीमित तरीके से। यह निचली जातियों के स्तर पर संसाधनों की उपलब्धता, गतिशीलता और पहुंच पर निर्भर है।
2. पश्चिमीकरण से नया वर्ग भेद पैदा हुआ और पहले से विद्यमान जाति–भेद दूर करने में कोई मदद नहीं मिली।
3. जिन जातियों का संस्कृतिकरण हुआ, उन्हें प्रभुत्व सम्पन्न जातियों की चुनाती का सामना करना पड़ सकता है। इसके फलस्वरूप सामाजिक प्रणाली में नए दबाव पैदा हो सकते हैं।
4. श्रीनिवास का विचार है कि संस्कृतिकरण की प्रकिया के फलस्वरूप स्थितिगत परिवर्तन होते हैं। लेकिन ये स्थितिगत परिवर्तन केवल जाति प्रणाली के भीतर होते हैं, न कि समूची व्यवस्था में जाति स्वयं नहीं बदलती परिवर्तन जाति के भीतर होता है। समस्त परिवर्तन, वास्तव में स्थितिगत परिवर्तन ह, इनसे सामाजिक गतिशीलता के चैनलों (माध्यमों) का इस्तेमाल करने में थोड़ा सुधार हो सकता है।
5. श्रीनिवास इन दो अवधारणाओं का इस तरह विश्लेषण करते हैं, जैसे इनके माध्यम से समग्र सामाजिक परिवर्तन किया जा सकता हो किन्तु, कृषि, उद्योग, राजनीति के क्षेत्रों में मूलभूत ढाँचागत परिवर्तनों, अमीर और गरीब, भूस्वामी और किरायेदार तथा प्रभुत्व सम्पन्न और कमजोर वर्ग के बीच बदलते संबंधो को श्रीनिवास के सांस्कृतिकगत परिदृश्य के दायरे में शामिल नहीं किया जा सकता।

छोटी और बड़ी परम्पराएं

रोबर्ट रेडफील्ड ने छोटी और बड़ी परम्पराओं की अवधारणाओं का इस्तेमाल मैक्सिको समुदायों में सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए किया। इस फ्रेमवर्क का इस्तेमाल करते हुए मिल्टन सिंगर और मैकिम मैरिअट ने भारत में कुछ अध्ययन किए। ''परम्परा का सामाजिक संगठन'' सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का आधार है। सिंगर और मैरिट के अनुसार भारतीय सभ्यता का स्वरूप मौलिक रूप या देराज है। इस पर सामाजिक परिवर्तन के बाहरी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

या विजातीय घटकों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है।

भारत की मौलिक सभ्यता को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : (1) छोटी परम्परायें और (2) बड़ी परम्परायें। छोटी परम्पराओं के अंतर्गत लोक अथवा अनपढ़ ग्रामवासियों में प्रचलित सांस्कृतिक प्रक्रियाएं आती हैं, जबकि बड़ी परम्पराओं के अंतर्गत आभिजात्य अथवा गिने चुने समृद्ध लोगों में प्रचलित सांस्कृतिक प्रक्रियाएं शामिल हैं। छोटी और बड़ी परम्पराओं के बीच लगातार सम्पर्क बना रहता है। तार्किक दृष्टि से लोक और आभिजात्य के बीच विचारों का निरन्तर प्रवाह और सामाजिक संबंधों का निर्वहन होता है। रोबर्ट रेडफील्ड के अनुसार ''किसी भी सभ्यता में गिने चुने विचारशील लोगों की महान परम्परा और असंख्य सामान्य जनों की छोटी परम्परा होती है''

महान परम्परा का पोषण स्कूलों और मंदिरों में होता है। जबकि छोटी परम्परा का निर्वाह अनपढ़ ग्रामोण समुदायों द्वारा किया जाता है। दार्शनिकों, ईश–चिन्तकों और शिक्षित लोगों की परम्परा सावधानीपूर्वक पोषित और हस्तान्तरित होती है। छोटे लोगों की परम्परा सामान्यतः तथ्य रूप में मान ली जाती है और उसकी अधिक जांच–पड़ताल नहीं की जाती अथवा उसे अधिक परिष्कृत या महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता। छोटी परम्परा और बड़ी परम्परा की अवधारणा की विशेषताएं इस प्रकार हैं :

1. दोनों परस्पर आश्रित हैं और एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। इन्हें विचार और कार्य की दो धारायें कहा जा सकता है जो अपनी विशिष्टताएं एक दूसरे में प्रवाहित करती हैं।
2. बड़ी परम्परा का अध्ययन छोटी परम्परा का विकास है, इसलिए वे एक–दूसरे का आयाम हैं।
3. दोनों परम्पराओं में बड़ी परम्परा को अधिक आधुनिक माना जाता है, यह प्रामाणिक समझी जाती है और आभिजात्य वर्ग के लेखन और कार्यों में यह विशेष रूप से व्यक्त होती है और सामाजिक प्रतिष्ठा इसे स्वीकार करने पर निर्भर है। छोटी परम्परा लोकप्रिय अंतर्धारा का अंग है, जिसकी प्रभावशीलता शिक्षित समाज द्वारा महसूस की जाती है,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लेकिन आधिकारिक रूप से स्वीकार नहीं किया जाता है या कम करके आंका जाता है। बड़ी परम्परा की परिकल्पनाओं को विश्वास कहा जाता है जबकि छोटी परम्परा की परिकल्पनाओं को अंधविश्वास माना जाता है। वास्तव में, किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा इनमें से उस परम्परा पर निर्भर हो सकती है, जिसे वह अपने जीवन में अपनाता है। प्रोफेसर जीवोन ग्रुनेवॉम ने 'दराल इस्लाम' में इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि समाज में इन परम्पराओं/प्रक्रियाओं के साथ मूल्यों की उच्चता या निम्नता जुड़ी हुई है।

4. रोबर्ट रेडफील्ड के अनुसार भारत की छोटी परम्पराओं का विश्वव्यापी रूप कुल मिलाकर बहुदेववादी, जादुई और गैर दा"र्ानिक है जबकि महान् वैदिक परम्परा के सूत्रों के माध्यम से अलग–अलग बौद्धिक और नैतिक पहलुओं पर जार दिया गया है। देव बहुदेववादी और काव्यात्मक है, उपनिषद अद्वैती और आस्तिक है। वैष्णववाद और शैववाद ईश्वरी और नैतिक है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 'रामायण' का गहरा प्रभाव है। वाल्मीकि कृत 'रामायण' संस्कृत ग्रंथ है जबकि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना हिन्दी की एक बोली 'अवधी' में की। समय और स्थान के अन्तरों के फलस्वरूप राम की कथा समझने में कठिन होती गई और इस तरह विभिन्न स्थानोय भाषाओं में उसे लिखा गया।
5. महान परम्परा, यानी संस्कृत परम्परा स्थानीय समुदायों के जीवन रखती है। मौलिक और अभि समूह के प्रति आम लोगों का भारत में व्यक्ति की सांस्कृतिक अनमानों में भागीदारी को उसकी हैसियत से सम्बद्ध माना जाता है। उन्नोथान, यागेन्द्र सिंह, इन्द्रदेव और एसएल श्री वास्तव ने बड़ी परम्परा को आभिजात्य परम्परा कहा है। उनके अनुसार आभिजात्य और लोक परम्पराएं, जनजातिय संस्कृति सहित भारतीय संस्कृति की दो उपसंस्कृतियां है। ये दोनों एक दूसरे को पूरक है और एक का अस्तित्व दूसरी के बने रहने के लिए अनिवार्य है। अभिजात्य परम्परा अधिक व्यवस्थित वि"ाष्ट और स्वयं सजग है। जबकि लोक संस्कृति उतनी व्यवस्थित और वि"ाष्ट नहीं है। लोक संस्कृति आभिजात्य परम्परा से कुछ तत्व ग्रहण करके एक तंत्र के जरिय लोगों में उनका संचार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करती है। आभिजात्य परम्परा भी लोक परम्परा से कुछ तत्व उधार लेती है और उन्हें उपर्युक्त परिष्कार के साथ अपनी प्रणाली का हिस्सा बना लेती है।

मैकिम मैरिअट ने किसान गढ़ी में इन दो परम्पराओं के बीच अंतर्सम्बंध का अध्ययन किया। उन्होंने छाटी और महान परम्परा के बीच संचार का वर्णन करते हुए सार्वभौमिकीकरण और स्थानीयकरण को अवधारणा प्रस्तुत की है। सार्वभौमिकीकरण का अर्थ है छोटी स्तर के तत्वों का प्रसार, जो सांस्कृतिक अथवा महान परम्परा का हिस्सा भी बन सकते है इसमें न केवल सांस्कृतिक जागरूकता का बल्कि सांस्कृतिक विषयवस्तु का भी प्रसार होता है। मैरिअट का मानना है कि दीपावली और रक्षाबंधन के पर्वों की लोक परम्परा में गहरी पैठ है। किन्तु श्रीवास्तव की राय इस बारे में भिन्न है। उनका मानना है कि इन त्यौहारों की उत्पत्ति के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। स्थानीयकरण की प्रक्रिया का अर्थ है संस्कृत रूप का विश्वसनीयता के अभाव और उपेक्षा की वजह से कम व्यवस्थित और कम मौलिक रूप में सीमित रहना हैं। इसके अन्तर्गत बताया जाता है कि किस प्रकार बड़ी परम्परा के तत्वों का क्षय होता जाता है और ये लोक परम्परा का हिस्सा बन जाते हैं। मैरिअट इसके लिए गोवर्धन पूजा और नवरात्र उत्सव का उदाहरण देते है। उनका कहना है कि ये स्थानीयकरण की अवधारणा के अंग है शुरू में ये उत्सव आभिजात्य वर्ग द्वारा मनाए जाते थे, लेकिन धीरे– धीरे ये छोटी परम्परा के साथ एकीकृत हो गए और आज केवल लोक अथवा कृषक समुदाय द्वारा ही इन्हें मनाया जाता है। हालांकि किसी विशेष सांस्कृतिक की उत्पत्ति का यह पता लगाना बड़ा कठिन होता है कि उसका सूत्रपात बड़ी परम्परा में हुआ या लोक परम्परा में।

3. विविध परम्पराएँ

कुछ समाजशास्त्रियों का विचार है कि भारतीय परम्परा के ढाँचे के जटिल स्वरूप को समझने के लिए परम्पराओं का द्विभागीकरण पर्याप्त नहीं है। एस सी दूबे का विचार है कि भारतीय समाज में परम्पराओं की एक व्यवस्थित श्रंखला है। सस्कृतिकरण और प्रभुत्वसंपत्र की अवधारणाओं की भी आलोचना करते हैं। उनका कहना है कि संस्कृति की अवधारणा में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यमान संगठनात्मक गति"ाीलता अवास्तविक लगती है वे भारत में परम्पराओं को छह वर्गों में विभाजित करते हैं। ये इस प्रकार हैः—

1. शास्त्रीय परम्परा
2. उभरती हुई राष्ट्रीय परम्परा
3. क्षेत्रीय परम्परा
4. स्थानीय परम्परा
5. पश्चिमी परम्परा
6. सामाजिक समूहों की स्थानीय और उप सांस्कृतिक परम्पराएं ।

दूबे के अनुसार, इनमें से सभी परम्पराओं का अध्ययन ग्रामीण और शहरी संदर्भों में किया जाना चाहिए। परिवर्तन का मूल्यांकन किया जा सके भारतीय समाज के जटिल स्वरूप को शामिल करने की दृष्टि से इस दृष्टिकोण को व्यापक क्षेत्र माना जाता है.। योगेन्द्र सिंह का कहना है कि यह वर्गीकरण भी तदर्थ है ठीक उसी तरह जैसे संस्कृतिकरण की अवधारण तदर्थ है। यह स्वतः शोध प्रणाली है दूबे ढाँचे की बजाय संस्कृति पर अधिक बल देते हैं।

ढांचागत दृष्टिकोण।

ढांचागत संरचनागत विश्लेषण सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए आकस्मिक भित्रताओं की पहचान करते हैं इसके अन्तर्गत सांस्कृतिक दृष्टिकोण की बजाय सामाजिक संबंध सूत्रता के नेटवर्क पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। यह संबंध सूत्रता रीति रिवाजों, मूल्यों वैचारिक अवधारणाओ उसके एकोकरण और परिवर्तन पर निर्भर है। अध्ययन की इकाई विचार मानदण्ड और मूल्य नही बल्कि भूमिकाएं और निर्भरता है इस प्रकार लोगों के समूह, वर्ग, जाति, गोत्रता, वर्ग, व्यावसायिक समूह, फेक्ट्री और प्र"ाासनिक ढांचे से संरचनागत वास्तविकताओ का गठन होता है। जो सामाजिक अन्तर सम्पर्क के वि"ाष्ठ क्षेत्रों के साथ समझौता करती है ये वास्तविकताएं और मनुष्य की अनिवार्य स्थितियों से उभरती है और इनकी तुलना अंतरसांस्कृतिक और प्रति सांस्कृतिक आधार पर की जाती है।

संज्ञानात्मक ऐतिहासिक / वैचारिक दृष्टिकोण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस दृष्टिकोण का समर्थन लुई डूमोट ने किया। उन्होंने परम्परागत वैचारिक ढांचे में अनुकूलो और रूपान्तरकारी प्रक्रियाओं के संदर्भ में परवर्तन पर बल दिया। सामाजिक ढांचों में पतिवर्तन लाने के लिए सांस्कृतिक या वैचारिक बदलाव पूर्व शर्त है। डूमोट भारतीय समाज पर संबंध सूत्रता की प्रणाली के संदर्भ में नहीं बल्कि विचार या मूल्य प्रणाली अथवा संज्ञानात्मक संरचनाओं के संदर्भ में विचार करते है। उनके अनुसार इस बात पर ध्यान देने की आव"कता है कि पश्चिमी संस्कृति के उद्घाटित होने पर भारतीय मस्तिष्क पर क्या प्रतिक्रियाएं होती है और किस प्रकार पि"चमी संस्कृति के संज्ञानात्मक तत्वो जैसे स्वतंत्रता लोकतंत्र के प्रभाव से भारतीय परम्परा की संज्ञानात्मकता उन्हें स्वोकार करती है या अस्वीकार करती है। भारतीय और पश्चिमी संज्ञानात्मक प्रणालियों में जो विषमता है। वह भारतीय संस्कृति के समष्टिगत स्वरूप और पश्चिमी सस्कृति के वादी स्वरूप में निहित है। यह विषमता भारत में परम्परा और आधुनिकता के बीच तनाव की समस्या को भी जन्म देती है।

गुन्नर मिडिल का संस्थागत दृष्टिकोण

गुन्नर मिर्डिल आर्थिक विकास में रुकावट के रूप में गैर–आर्थिक घटकों की भूमिका पर प्रकाश डालते है। आर्थिक विकास को वांछित दिशा प्रदान करने के लिए जीवन है।

कार्य संस्थानों के प्रति दृष्टिकाण में अवश्य परिवर्तन आना चाहिए। द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक दृष्टिकोण इस दृष्टिकोण के प्रमुख सूत्रधार कार्ल मार्क्स है। मार्क्स की योजना में सामाजिक परिवर्तन के चार चरण है:

(क) एशियाटिक, (ख) प्राचीन, (ग) सामन्तवादी और (घ) उत्पादन

आधुनिक बुर्जुवावादी साधन मार्क्सवादी दृष्टिकोण के साथ भारत में सामाजिक परिवर्तन संबंधी अध्ययन के अंतर्गत जाति और राजनीति, उत्पादन के तरीकों, वर्ग संबंध और संसाधनों तथा अवसरों के विवरण तक पहुंच का विश्लेषण किया जाता है।

समन्वित दृष्टिकोण

योगेन्द्र सिंह ने भारत में सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए एक समन्वित दृ

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ष्टिकोण का सुझाव दिया है। वे परिवर्तन के स्रोतो सांस्कृतिक ढांचे छोटी और बड़ी परम्पराओं और सामाजिक ढांचे (सूक्ष्म और बृहद ढांचे) पर बल देते है। विजातीय या बाहरी परिवर्तनों के संदर्भ में सांस्कृतिक संरचना के स्तर पर इस्लामीकरण और प्राथमिक पश्चिमीकरण (छोटी परम्परा) तथा गौण इस्लामी प्रभाव और गौण पश्चिमीकरण या आधुनिकीकरण (महान परम्परा) का अध्ययन किया गया है। सामाजिक संरचना के स्तर पर भूमिका भिन्नताओं सूक्ष्म स्तर पर नई तर्कसंगतता और बृहत् स्तर पर राजनीतिक नवीनताओ अभिजात्य नौकरशाही उद्योग आदि के नये ढांचे का अध्ययन किया जाता है।

सांस्कृतिक ढाँचे के स्तर पर नियत विकास संबंधी परिवतनों के संदर्भ मैं संस्कृतिकरण अथवा परम्पराकरण (छोटी परम्परा) और सांस्कृतिक पुनर्जागरण (महान परम्परा) होता है। सामाजिक संरचना के स्तर पर पद्धति पुनरावृत्ति, मजबूरन आप्रवासन अथवा सूक्ष्म स्तर पर आबादी स्थानान्तरण और आभिजात्य प्रसार का अध्ययन शामिल है। बृहत् स्तर पर राजाओं के राज्यारोहण का अनुक्रम, शहरों और व्यापार केन्द्रों के उदय और पतन का अध्ययन ही शामिल है। योगेन्द्र सिंह स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक प्रणाली अथवा परम्परा के भीतर और बाहर किसी प्रकार सामाजिक परिवर्तन घटित होते हैं। उनके समन्वित दृष्टिकोण के अंतर्गत परिवर्तन के स्रोतों सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाओं के बीच तथा वास्तविक सामाजिक परिवर्तन के सूक्ष्म और बृहत् स्तरों के बीच संतुलन कायम करने का प्रयास किया जाता है।

निष्कर्ष

भारत में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करने संबंधी इन अधिकतर दृष्टिकोणों में सांस्कृतिक पहलुओं पर जरूरत से अधिक बल दिया गया है और ढांचागत पहलू छूट गए हैं। फिर भी उपरोक्त दृष्टिकोण हमारे जैसे अत्यधिक विविधता वाले समाज में परिवर्तन की जटिल अवधारणा का समुचित विश्लेषण करते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. आहूजा, राम, ''इंडियन सो"ाल सिस्टम'' रावत प्रका"ान जयपुर 1995 पृ.सं. 207
2. श्रीनिवास,एम.एन. ''रिलीजन एण्ड सोसाइटी एमोंग दा कूर्गस ऑफ साउथ इंडिया'' 1952 पृ. सं. 30
3. मजूमदार, डी.एन. ''कास्ट एण्ड कम्यूनिके"ान इन एन इंडिया विलेज'' पृ.सं. 333–35
4. योगेन्द्र, सिंह, ''मोडर्नाइजे"ान ऑफ इंडियन ट्रेडि"ान'' पृ. सं. 9
5. बी.कृपास्वामी, ''सो"ाल चेंज इन इंडिया'' पृ.सं. 62